दो सिर वाला जुलाहा

एक बार मन्थरक नाम के जुलाहे के सब उपकरण, जो कपडा बुनने के काम आते थे, टूट गये। उपकरणो को फिर बनाने के लिये लकडी की जरुरत थी । लकडी काटने की कुल्हाडी लेकर वह समुद्रतट पर स्थित वन की ओर चल दिया। समुद्र के किनारे पहुँचकर उसने एक वृक्ष देखा और सोचा कि इसकी लकडी से उसके सब उपकरण बन जायेगे। यह सोच कर वृक्ष के तने मे वह कुल्हाडी मारने को ही था कि वृक्ष की शाखा पर बैठे हुए एक देव ने उसे कहा- "मैं इस वृक्ष पर आनन्द से रहता हूँ, और समुद्र की शीतल हवा का आनन्द लेता हूँ। तुम्हे इस वृक्ष को काटना उचित नही। दूसरे के सुख को छीनने वाला कभी सुखी नहीं होता।"

जुलाहे ने कहा- "मैं भी लाचार हूँ। लकडी के बिना मेरे उपकरन नही बनेगे, कपडा नही बुना जायगा, जिससे मेरे कुटुम्बी भूखे मर जायेगे। इसलिये अच्छा यही है कि तुम किसी और वृक्ष का आश्रय लो, मैं इस वृक्ष की शाखाये काटने को विवश हूँ।"

देव ने कह -"मन्थरक ! मैं तुम्हारे उत्तर से प्रसन्न हूँ। तुम कोई भी एक वर माँग लो, मैं उसे पूरा करुँगा, केवल इस वृक्ष को मत काटो।"

मन्थरक बोला-"यदि यही बात है तो मुझे कुछ देर का अवकाश दो। मैं अभी घर जाकर अपनी पत्नी से और मित्र से सलाह करके तुम से वर मांगूंगा।"

देव ने कहा- "मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करुँगा।"

गाँव में पहुँचने के बाद मन्थरक की भेंट अपने एक मित्र नाई से हो गई। उसने उससे पूछा-"मित्र ! एक देव मुझे वरदान दे रहा है, मैं तुझ से पूछने आया हूँ कि कौन सा वरदान माँगा जाए।"

नाई ने कहा- "यदि ऐसा ही है तो राज्य मांग ले। मैं तेरा मन्त्री बन जाऊंगा, हम सुख से रहेंगे।"

तब, मन्थरक ने अपनी पत्नी से सलाह लेने के बाद वरदान का निश्चय करने की बात नाई से कही। नाई ने स्त्रियों के साथ ऐसी मन्त्रणा करना नीति-विरुद्ध बतलाया। उसने सम्मति दी कि "स्त्रिया प्रायः स्वार्थपरायणा होती है। अपने सुख-साधन के अतिरिक्त उन्हे कुछ भी सूझ नही सकता। अपने पुत्र को भी जब

वह प्यार करती है, तो भविष्य मे उसके द्वारा सुख की कामनाओ से ही करती है।"
मन्थरक ने फिर भी पत्नी से सलाह किये बिना कुछ भी न करने का विचार प्रकट किया। घर पहुँचकर वह पत्नी से बोला- "आज मुझे एक देव मिला है। वह एक वरदान देने को उद्यत है। नाई की सलाह है कि राज्य मांग लिया जाय। तू बता कि कौन सी चीज़ मांगी जाये।"
पत्नी ने उत्तर दिया- "राज्य-शासन का काम बहुत कष्ट-प्रद है। सन्धि-विग्रह आदि से ही राजा को अवकाश नही मिलता। राजमुकुट प्रायः कांटो का ताज होता है। ऐसे राज्य से क्या अभिप्राय जो सुख न दे।"
मन्थरक ने कहा- "प्रिय ! तुम्हारी बात सच है, राजा राम को और राजा नल को भी राज्य-प्राप्ति के बाद कोई सुख नही मिला था। हमे भी कैसे मिल सकता है किन्तु प्रश्न यह है कि राज्य न मांग जाय तो क्या मांगा जाये।"
मन्थरक-पत्नी ने उत्तर दिया- "तुम अकेले दो हाथो से जितना कपडा बुनते हो, उससे भी हमारा व्यय पूरा हो जाता है। यदि तुम्हारे हाथ दो की जगह चार हो और सिर भी एक की जगह दो हो तो कितना अच्छा हो। तब हमारे पास आज की अपेक्षा दुगना कपडा हो जायगा। इससे समाज मे हमारा मान बढेगा।"

मन्थरक को पत्नी की बात जच गई। समुद्रतट पर जाकर वह देव से बोला- "यदि आप वर देना ही चाहते है तो यह वर दो कि मैं चार हाथ और दो सिर वाला हो जाऊँ।"
मन्थरक के कहने के साथ ही उसका मनोरथ पूरा हो गया। उसके दो सिर और चार हाथ हो गये। किन्तु इस बदली हालत में जब वह गाँव मे आया तो लोगो ने उसे राक्षस समझ लिया, और राक्षस-राक्षस कहकर सब उसपर टूट पडे। लोगो ने पत्थरो से इतना मारा कि वह वही मर गया।

सीख : मित्र की शिक्षा मानो ।

यह कथा सुनकर सुवर्णसिद्धि ने कहा, “इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि अगर अपने पास बुद्धि न हो तो मित्रो की सलाह ही मान लेनी चाहिए।"

चक्रधर ने कहा, “ठीक ही कहते हैं। असंभव की आशा और अनागत की चिंता मे डूबे रहनेवालो की दशा काल्पनिक सोमशर्मा के पिता जैसी होती है।"

सुवर्णसिद्धि ने पूछा, "वह कौन था?"

चक्रधर ने बताया--

ब्राह्मण का सपना

ढ भिर वाला ल्लाफा

एक गार भनगुक नाभ क ल्लाफ के भेग उपकरण, ल कैपफ गनन के काभ मुतथे, टए गया उपकरण के ढिर गनान के लिय लकडी की लगरत थी। लकडी काटने की कुल्हाडी लकेर वफ भभगुट पर भिड्ड वन की ओर ग्रल ढिया। भभगुट के किनार पहुंचकर उमन एक वृक्ष ढपा ओर मग्रा कि उमकी लकडी म उमक भेग उपकरण गन लयग। यफ मग्र कर वृक्ष क तन भ वफ कुल्हाडी भारन को ही था कि वृक्ष की माखा पर गठ फुए एक ढव न उमम कफा-"भ उम वृक्ष पर मुगन्ध न रफता फू, ओर भभगुट की मीतल फवा का मुगन्ध लता फू। तुम उम वृक्ष क काटना उगिड नही। ढभुर के भाप क जीवन वाला कछी भापी नही फोते।"

ल्लाफ न कफा- "भ ही लाग्रार फू। लकडी क गिना भर उपकरण नही गनग, कपफ नही गन पायगा, ओर भभ भर कुटुम्ब भूख भर लयगा। उमलिय मग्रछ यही फ कि तुम किमी ओर वृक्ष का मुमय ल, भ उम वृक्ष की माखाय काटन क विवम फू।"

ढव न कफ -"भनगुक! भ तुम्हार उत्तर म पुमन फू। तुम कहीं ही एक वर भाग ल, भ उम पूरा करगा, कवल उम वृक्ष क भत काट।"

भनगुक गोल-"यढि यही गात फ त भुग कुछ ढर का मवकाम ढा। भ मोगी घर लकर मपनी पत्नी म ओर भित्र म मलाफ करक तुम म वर भागगा।"

ढव न कफा- "भ तुम्हारी पुतीक्षा करगा।"

गांव भ पहुंचन क गाढ भनगुक की भट मपन एक भित्र नाई म फ गई। उमन उमम पूछा-"भित्र! एक ढव भुग वरढान ढ रफा फ, भ तुम म पूछन मया फू कि कौन मा वरढान भागना लाफ।"

नाई न कफा- "यढि एमा ही फ तो राय भाग ल। भ तरा मन्त्री गन लऊगा, फम भाप भ रफग।"

तग, भनगुक न मपनी पत्नी म मलाफ लने क गाढ वरढान का निमछय करन की गात नाई म कही। नाई न भिग्र क माथ एमी भन्तरणा करना नीति-विरुद्ध गतलाया। उमन मम्मति ढी कि "भिग्रा प्रायः मद्गुपरायण फती फ। मपन भाप-भापन क मतिरिक्त उनक कुछ ही भाग नही मकता। मपन पेट क ही लग वफ पूरा करती फ, त वे विधक म उमक म्नहा भाप की कामनाए भ ही करती फ।"

भनगुक न ढिर ही पत्नी म मलाफ किय गिना कुछ ही न करन का विग्रार पुकट किया। घर पहुंचकर वफ पत्नी म गोल- "मुग भाग एक ढव भिला फ। वफ एक वरढान ढन क उढ्ढ फ। नाई की मलाफ फ कि राय भाग लिया लय। तुम्हा कि कौन मी गीग भागी लय।"

पत्नी न उत्तर ढिया- "राय-मासन का काभ गफुत कष्टपुढ फ। मन्धि-विग्रफ म गुढ्ढि म ही राम क मवकाम नही भिलता। रायभुकुट पुायः काट का ताम फती फ। एम राय म कोई मतिप्राय ल भाप न ढा।"

भनगुक न कफा- "पिय! तुम्हारी गात मच फ, राय राम क ओर राय नल क ही राय पुाप्ति क गाढ कई भाप नही भिला था। फम ही कमी भिल मकता फ कि नगुम्बन्ध फ कि राय न भाग लय त कुछ भागा लय।"

भनगुक-पत्नी न उत्तर ढिया- "तुम मकल ढो फाथ म जितना कपफा गनत फ, उमम ही फमारा व्यय पूरा फ जाता फ। यढि तुम्हार फाथ ढ कौ लगफ ग्रार फ ओर भिर ही एक की लगफ ढ फ त कितना मच्छा फ। तग फमार पाम मुग की मपक्षा ढगुना कपफा फ लयगा। उमम मभाल म फभारा भान गढगा।"

भनुक क पेतृनी की गाउ एग गई। मभ्रुत पर एकर वह दवे म गेलेा- "यमि सुप वर दनेा ही याफउहउे येह वर द कि मयोार हाय छार दमिर बाला ह एउ।" भनुक क केहन के माय ही उमका भनरोप पुरा ह गेया। उमक दे मिर छार याार हाय ह गेया। किन्तु उम गदली हालउ मएग वह गावें मसुया उ लेगे ने उम रावम ममाप लिया, छार रावम-रावम कहकर मग उमपर एए पकालेगे ने पेतृ मे उउना भारा कि वह वही मर गया।

मीाप : मित्र् की मिक्ष भानो

यह कथा मनुकर मवलमिम्नि ने केहा, "उमीलिा उ मे केहउा ह कि सगर सपन पाम गम्नि ह उे मित्र् की मलाह ही भान लनी याहिाप।"

याकृपार न केहा, "ठीक ही कहउ हो सिमंडव की सुमा छार सनागउ की यिंउा भविष्-रहनवोल की दमा काल्पनिक मभेमगम्न के पिउा एमी हउी हा"

मवलमिम्नि पेकु, "वह कौन था?"

याकृपार न गेउाया--

गाहम्र का मपना

सनवाद - उर्मिला सिमे